Vol 3 Issue 5 Nov 2013

Impact Factor : 1.9508 (UIF)

ISSN No :2231-5063

Monthly Multidisciplinary Research Journal

Golden Research Thoughts

Chief Editor
Dr.Tukaram Narayan Shinde

Publisher
Mrs.Laxmi Ashok Yakkaldevi

Associate Editor
Dr.Rajani Dalvi

Honorary
Mr.Ashok Yakkaldevi

IMPACT FACTOR : 1.9508 (UIF)

Welcome to ISRJ

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2230-7850**

Indian Streams Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

International Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya [Malaysia]

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus Pop

Mohammad Hailat
Dept. of Mathmatical Sciences, University of South Carolina Aiken, Aiken SC 29801

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Catalina Neculai
University of Coventry, UK

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Department of Chemistry, Lahore University of Management Sciences [PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Horia Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

Nawab Ali Khan
College of Business Administration

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University, Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU, Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.net

Golden Research Thoughts
Volume-3, Issue-5, Nov-2013
ISSN 2231-5063

Available online at www.aygrt.isrj.net

लखनऊ जिला के हिन्दु एवं मुसलिम अभिभवकों का लड़कियों की शारीरिक शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण : एक अध्ययन

एम.पी.गौड , मधु गौड

सहायक प्रोफेसर, शारीरिक शिक्षा, डी. ए. वी. पी. जी. महाविद्यालय, लखनऊ उत्तर प्रदेश।
सहायक प्रोफेसर, शारीरिक शिक्षा, ज्वाला देवी विद्या मंदिर पी. जी. महाविद्यालय, उत्तर प्रदेश कानपुर।

सारांश: भूमिका–

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज में व्यवस्थित जीवन यापन करने के लिए शिक्षा अनिवार्य तत्व है। शिक्षा का तात्पर्य मूलतः व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास से है। इसमें व्यक्ति के अन्दर छिपी शक्तियों का विकास किया जाता है। स्वामी विवेकानन्द ने शिक्षा की व्याख्या करते हुए कहा है कि "शिक्षा मनुष्य की अन्तर्निहित पूर्णता की अभिव्यक्ति है।" रवीन्द्रनाथ टैगोर ने शिक्षा शब्द का प्रयोग व्यापक अर्थ में करते हुए अपनी पुस्तक "Personality" में लिखा है– " The highest education is that which makes our life in the harmony with all existence." अतः शिक्षा का अर्थ बालक में निहित शक्तियों का विकास करना है। अरस्तू के अनुसार स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मन का निर्माण करना ही शिक्षा है। प्लेटो के अनुसार शारीरिक, मानसिक तथा बौद्धिक विकास की प्रक्रिया को शिक्षा कहते हैं। शिक्षा को व्यक्ति के जीवन की आधारशिला माना गया है। इस संदर्भ में गाँधी जी का दृष्टिकोण उल्लेखनिय है, उन्होने शिक्षा का अर्थ समझाते हुए "हरिजन" में लिखा है– " By education I mean an all round drawing out of the best in child and man's body, mind and soul."

प्रस्तावना:

शारीरिक शिक्षा का सम्बन्ध शारीरिक सम्पूर्णता के साथ है। इस सम्पूर्णता की प्राप्ति के लिए स्वास्थ्य – शिक्षा का उद्देश्य यह है कि वह बालक के मानसिक, नैतिक एवं सामाजिक गुणों को प्रशिक्षित करके उसमें वातावरण के प्रति जागरूकता, मानसिक चेतना, साधन– सम्पन्नता, अनुशासन, सहयोग, दूसरों के प्रति सहानुभूति, सम्मान एवं उदारता की भावना का उन्नयन करें। यह कहना गलत न होगा कि आज शारीरिक शिक्षा को सामान्य शिक्षा के महत्वपूर्ण अंगभूत स्वरूप में स्वीकार कर लिया गया है।

मानव के व्यवहार में वांछनीय परिवर्तन करने के लिए व्यवस्थित शिक्षा की परम आवश्यकता है। शिक्षा पालन पोषण करती है। यह उचित मार्गदर्शन करके सांसारिक चिंताओं को दूर कर प्रसन्नता प्रदान कर कीर्ति का प्रकाश चारों ओर फैलाती है। समस्याओं को सुलझाकर जीवन को सुसंस्कृत कर देश और विदेश प्रत्येक स्थान पर हमारी सहायता करती है। अशिक्षित होने पर मानव दरिद्रता, शोक एवं कष्ट के भयंकर अंधकार में डूबा रहता है। शारीरिक शिक्षा वह प्रकाश है जिसके द्वारा मानव की समस्त शारीरिक, मानसिक, सामाजिक तथा आध्यात्मिक शक्तियों का विकास होता है। जिससे वह समाज का उत्तरदायी घटक एवम् प्रखर चरित्र का नागरिक बनकर समाज की सर्वांगीण उन्नति में अपनी शक्ति का उत्तरोत्तर प्रयोग करने की भावना से ओत–प्रोत होकर संस्कृति व सभ्यता को पुनः जीवित एवं स्थापित करने के लिए प्रेरित होता है। मानवीय जीवन में शारीरिक शिक्षा एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। शारीरिक शिक्षा बालक व व्यस्क के विभिन्न व्यवहारों तथा आचरणों को सिखाती है। उनके सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक तथा अन्य पक्षों का विकास करके उनमें प्रेरणा जागृत करती है तथा उनके जीवन के समग्र रूप को समन्वित रूप से उत्थान के मार्ग पर अग्रसारित करती है। शारीरिक शिक्षा से न केवल व्यक्तित्व का विकास होता है बल्कि उसका श्रृंगार भी होता है। केवल शिक्षित व्यक्ति ही वातावरण से भली प्रकार आसानी से अनुकूलन कर सकता है।

मानवीय ज़ीवन में ही नहीं सामाजिक जीवन में भी शारीरिक शिक्षा महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है जिस समाज में जैसे आदर्श होंगे वहॉ की शिक्षा भी उन्हीं आदर्शों के अनुसार होगी। यदि किसी समाज के आदर्श किसी भी कारणवश बदल जाएंगे तो वहॉ की शिक्षा भी उन बदले हुए आदर्शों के अनुसार बदल जाती हैं।

आज समाज तीव्र गति से बदल रहा है स्वतंत्रता से पहले यह देश उन्नति की दौड़ में पीछे रहा परन्तु अब परिस्थितियॉ बदल गई हैं। विभिन्न धर्मों में सामाजिक परिवर्तन हुए हैं। जाति भेद की दीवारें टूटी हैं। नारियों को भी पुरूषों के समान अधिकार मिल रहे हैं। आज नारी घर की चार दीवारी से बाहर निकल कर पुरूष के समान ही उन्नति और आत्म निर्भरता के पथ पर अग्रसर है। आज जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में नारी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं।

शारीरिक शिक्षा का महत्व स्त्री व पुरूष दोनों के लिए अनेक दृष्टियों से है। इसका कार्य क्षेत्र इतना व्यापक है कि इसके अन्तर्गत सभी कार्य क्षेत्र आ जाते हैं जिनको पूरा करने से व्यक्ति अपने जीवन को सफल बनाते हुए सामाजिक कार्यों को उचित समय पर पूरा करने के योग्य बन जाता है। सामान्य रूप से शारीरिक शिक्षा व्यक्ति की मूल प्रवृत्तियों का नियन्त्रण, मार्गान्तीकरण तथा शोधन करते हुए उसकी जन्मजात शक्तियों के विकास में इस प्रकार की सहायता करती है कि उसका सर्वांगीण विकास हो जाए। यही नहीं शारीरिक शिक्षा व्यक्ति में चारित्रिक तथा नैतिक गुणों एवम् सामाजिक भावनाओं को विकसित करके उसे प्रौढ़ जीवन के लिए इस प्रकार तैयार करती है कि वह अपनी संस्कृति एवं सभ्यता का संरक्षण करते हुए उत्तम नागरिक के रूप में सामाजिक सुधार करके राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए अपने प्राणों की आहुति देने में तनिक भी नहीं हिचकता है। वह वातावरण से अनुकूलन करके उनमें आवश्यकतानुसार परिवर्तन करते हुए भौतिक सम्पन्नता को प्राप्त करते हुए चरित्रवान, वीर, साहसी, बुद्धिमान, उत्तम नागरिक के रूप में आत्मनिर्भर बनाकर उसका सर्वांगीण विकास करती हैं।

प्रस्तुत समस्या के अन्तर्गत लड़कियों की शारीरिक शिक्षा के प्रति अभिभवकों के दृष्टिकोण के उद्देश्य द्वारा यह ज्ञात करता है कि वर्तमान में अभिभावक अपनी लड़कियों को किस स्तर तक शारीरिक शिक्षा देने के पक्ष में हैं और वे अपनी लड़कियों का सेवारत रहना पसन्द करते हैं कि नहीं। तथ्यों के विश्लेषण हेतु 'टी' परीक्षण का प्रयोग किया गया है।

हिन्दू और मुस्लिम अभिभवकों की अपनी लड़कियों की शारीरिक शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण की तुलना

	हिन्दू अभिभवक	मुस्लिम_अभिभवक
मध्यमान	88.59	83.12
S.D.	8.6	7.20
N	132	132

टेस्ट की गणना हेतु तालिका

स्तर	तालिका से प्राप्त t का मान	गणना से प्राप्त t का मान	परिणाम
0.05	1.98	5.55	सार्थक
0.01	2.617	5.55	सार्थक

एम.पी.गौड , मधु गौड,"लखनऊ जिला के हिन्दु एवं मुसलिम अभिभावकों का लड़कियों की शारीरिक शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण : एक अध्ययन"
Golden Research Thoughts Vol-3, Issue-5 (Nov 2013): Online & Print

हिन्दू शहरी और हिन्दू ग्रामीण अभिभावकों के अपनी लड़कियों की शारीरिक शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण की तुलना

	हिन्दू शहरी अभिभवक	हिन्दू ग्रामीण अभिभवक
मध्यमान	89.35	87.83
S.D.	7.2	7.80
N	66	66

टेस्ट की गणना हेतु तालिका

स्तर	तालिका से प्राप्त t का मान	गणना से प्राप्त t का मान	परिणाम
0.05	2	1.15	असार्थक
0.01	2.655	1.15	असार्थक

उद्देश्य:

क) लड़कियों की शारीरिक शिक्षा के प्रति हिन्दू और मुस्लिम अभिभवकों के दृष्टिकोण का तुलनात्मक अध्ययन करना।

ख) हिन्दू शहरी और हिन्दू ग्रामीण अभिभावकों का अपनी लड़कियों की शारीरिक शिक्षा के प्रति दृष्टिकोणों का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँ : विश्लेषित परिकल्पनाएँ इस प्रकार हैं:–

क) हिन्दू और मुस्लिम अभिभवकों की अपनी लड़कियों की शारीरिक शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

ख) हिन्दू शहरी और हिन्दू ग्रामीण अभिभावकों का अपनी लड़कियों की शारीरिक शिक्षा के प्रति दृष्टिकोणों में भी कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

अतः दोनों परिकल्पनाओं के आधार पर कहा जा सकता है कि दोनों समुदायों के व्यक्ति अपनी लड़कियों को शारीरिक शिक्षा दिलाने के पक्ष में हैं। इस कार्य में उनकी आर्थिक स्थिति, सामाजिक स्थिति तथा पर्यावरण बाधक तत्व नहीं हैं।

संदर्भ:–

1) शारीरिक शिक्षा तथा ओलम्पिक अभियान – प्रो. अजमेर सिंह।

2) शारीरिक शिक्षा संकलन – डॉ. प्रीती पाण्डेय।

3) शारीरिक शिक्षा एवं मनोरंजन के लिए राष्ट्रीय परियोजना – शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार।

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished research paper.Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review of publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- EBSCO
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Golden Research Thoughts
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.net